

समाजवाद एवं साम्यवाद

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. प्रश्न - समाजवाद से आप क्या समझते हैं? समाजवाद के दो प्रभावों का वर्णन करें।

उत्तर - समाजवाद का एक वां किरील समाज होता है। तत्पर्ययः समाजवाद एक ऐसी सिद्धान्त है, जिसमें उत्पादन के साधनों (भूमि, जंगल, कारखाना इत्यादि) पर थोड़े व्यक्तियों के स्वामित्व के बदले सारे समाज का स्वामित्व हो। जैसे समाजवाद का जन्म पूँजीवाद के गर्भ से हुआ है। अतः आर्थिक जीवन के विपन्न के द्वारा व्यक्तिगत असमानता को दूर करना ही समाजवाद है।

समाजवाद मानवीय चिंतन में समतापौषक समाज की संकल्पना को स्थापित कर विश्व इतिहास को व्यापक और विस्तीर्ण रूप से प्रभावित किया।

- i. रूसी क्रांति - समाजवाद ने रूस के किसानों और विपन्न सर्वहारा वर्ग की शोषण-अपीड़न से मुक्ति के लिए उर्जा प्रदान की। फलस्वरूप विश्व इतिहास में प्रथम साम्यवादी क्रांति ही नहीं, सर्वहारा सरकार भी गठित हुई।
- ii. साम्यवादी व्यवस्था का अंत - समाजवादी चिंतन की प्रगतिशीलता साम्यवादी व्यवस्था और उससे जुड़ी संस्थाओं का अंत कर दिया।

2. प्रश्न - अक्टूबर की क्रांति क्या है?

उत्तर - विश्व इतिहास में अक्टूबर क्रांति पहली साम्यवादी क्रांति थी जिसने 7 नवम्बर 1917 (जुलियन कैलेंडर के अनुसार 25 अक्टूबर और ग्रेगोरियन कैलेंडर 7 नवम्बर) को लेनिन के नेतृत्व में बोलशेविकों ने बर्जुआ वर्ग की सत्ता को उखाड़ फेंका और सर्वहारा वर्ग के शासन की स्थापना की जिसे अक्टूबर क्रांति के नाम से जाना जाता है।

3. प्रश्न - प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय क्रांति हेतु भारी प्रशरण किया कैसे?

उत्तर - रूस जब प्रथम विश्वयुद्ध में शामिल हुआ था तब उसने बिना किसी प्रारंभिक तैयारी के ऐसा किया था। जहाँ प्रथम विश्वयुद्ध में नप्रे-चप्रे अत्याधुनिक हथियारों का प्रयोग हो रहा था वहाँ रूसी सेना के पास अपेक्षित संसाधन नहीं थे। बिना संसाधनों के अपना नेतृत्व प्रदान किया था उन्हें युद्ध का कोई अनुभव नहीं था अनुभवहीन के कारण संसाधनों को नष्ट करने हुए पीछे हटने की नीति अपनाई गई। परिणाम यह हुआ कि युद्ध में रूस की सेना लगातार हारती रही वहीं दूसरी तरफ संसाधनों का भी उतनी ही तेजी से विनाश हुआ। लिहाजा सेना और जनता में असंतोष बढ़ता गया। स्थिति इतनी विकराल हो गई कि लोगों को सड़क पर "हाथों की पुकार के साथ क्रांति में उतरना पड़ा।

वेज 2
4. प्रश्न - खुनी रविवार की घटना का उल्लेख करें।

उत्तर - 1904-05 के रूसी-जापानी युद्ध में रूस की पराजय से उसकी प्रतिष्ठा को गहरी ठेस पहुँची। जुलियन कलेंडर के अनुसार 9 जनवरी 1905 ई० रविवार के दिन हजारों की निरहत्थी भीड़ सैदी की माँग करती हुई अर्थात् छोटे भगवान् मुश्किल से दो के नारे लगाते हुए जार के सिंहासन पीटर्सबर्ग महल के सामने शांति पूर्ण सभा का आयोजन किया गया। जार ने इन निरहत्थे जनता की भावनाओं की उपेक्षा करते हुए सेना को गोली चला देने का आदेश दे दिया। सेना की गोली से हजारों लोग मारे गये, हजारों लोग घायल हुए, यह दिन रविवार का दिन था इसलिए इसे 'खुनी रविवार' या 'लाल रविवार' कहा जाता है।

5. प्रश्न - रॉबर्ट ओवेन का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर - 19वीं सदी के आरंभ में समाजवादियों के एक ऐसे वर्ग का उद्भव हुआ जिन्हें 'यूटोपियन' अर्थात् काल्पनिक समाजवादी कहा जाता है। इस श्रेणी के समाजवादियों में इंग्लैंड के रॉबर्ट ओवेन (1771-1858) का नाम महत्वपूर्ण है। इन्होंने इंडियाना (अमेरिका) में नया समन्वय के नाम से एक नए तरह के समुदाय की रचना का प्रयास किया। वह स्वयं उद्योगपति था। उसने प्लम पुत्रों की हालत में सुधार के लिए जैक कार्प किए। जैसे प्लम पुत्रों के वेतन में वृद्धि, काम के घंटे में कमी और श्रमिकों के बच्चों के लिए विद्यालय की स्थापना। ओवेन ने मजदूरों को संघ बनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

6. प्रश्न - इधूमा किस प्रकार की संस्था थी?

उत्तर - जार निकोलस की स्वेच्छाचारी निरंकुश प्रवृत्ति ने रूसी जनता को आक्रोशित ही नहीं क्रांति के लिए बाध्य भी किया। फलतः रविवार 5 जनवरी 1905 को खुनी क्रांति की घटना घटित हुई। लिहाजा 1905 की क्रांति के पश्चात् जार निकोलस द्वितीय ने एक पार्लियामेंट स्थापित करना स्वीकार किया। जिसे 'इधूमा' कहा जाता है। किंतु यह सच्चे अर्थों में एक लोकतांत्रिक अथवा प्रतिनिधि संस्था नहीं थी। यह एक प्रति क्रियात्मक तथा अनुत्तरदायी सभा थी। जो जार के साथ में स्वेच्छाचारी शासन को सदा के लिए बनाए रखने के लिए एक ~~अस्थायी~~ शासन ही था।